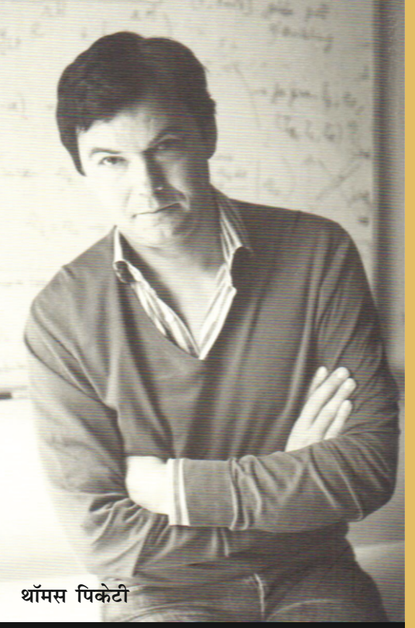

थॉमस पिकेटी

प्रो. बागला वर्ष 1971 में दिल्ली विश्व विद्यालय के श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स से बी.ए. ऑनर्स अर्थशास्त्र और 1973 में देहली स्कूल ऑफ इक्नॉमिक्स से अर्थशास्त्र में एम.ए. के उपरान्त निरंतर दिल्ली विश्वविद्यालय के पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। पिछले 27 वर्षों से आप इन्दिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र के स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की अध्ययन सामग्री के लेखन, अनुवाद, अनुवाद परिशोधन एवं संपादन कार्य से जुड़े हुए हैं।

नॉबेल पुरस्कार से सम्मानित प्रख्यात अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन की सात पुस्तकों का अनुवाद करने का भी अवसर आपको मिला—इन पुस्तकों में उनकी बहुचर्चित रचनाएं—Poverty and Famines, On Economic Inequality Development as Freedom, The Argumentative Indian और The Idea of Justice भी सम्मिलित हैं।

श्रेष्ठतम न्यूयॉर्क टाईम्स ''बैस्ट सेलर''

यह कहना बहुत सुरक्षित प्रतीत हो रहा है कि फ्रांसीसी अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी का विशद् ग्रन्थ—''पूंजी—इक्कीसवीं सदी में'' इस वर्ष का—संभवतः पूरे दशक का—सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशन होगा। पिकेटी, जिन्हें विश्व का आय और धनसंपदा की विषमता के विषय का अग्रणी विशेषज्ञ माना जा सकता है, इस ग्रन्थ में छोटे से आर्थिक संभ्रांत वर्ग के हाथों में आय के निरंतर संकुलन का विवरण देकर संतुष्ट नहीं हो जाते हैं। वे बहुत सशक्त रूप से यह बता रहे हैं कि हम एक बार फिर ''संपदाधारी पूंजीवाद'' की उस संरचना की ओर अग्रसर हो रहे हैं जहां न केवल सारी अर्थव्यवस्था के नियंत्रण तन्त्र पर धनसंपदा बल्कि उत्तराधिकारी संपदा का वर्चस्व होता है, और जहां व्यक्ति के प्रयास एवं प्रतिभा की अपेक्षा उसका 'जन्म' अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

—पॉल क्रूगमैन, न्यूयॉर्क टाईम्स

अनेक वर्षों से अर्थशास्त्र की अतिप्रतीक्षित पुस्तक।

—टॉवी सैंजर, ग्लॉब एण्ड मेल

पिकेटी ने ऐसी पुस्तक लिखी है जिसे हमारे युग के प्रश्नों की परिभाषा करने का कोई भी इच्छुक अनदेखा नहीं कर पायेगा।

—जॉन कैस्सीडी, न्ययॉर्कर

थॉमस पिकेटी की नई पुस्तक ''पूंजी—इक्कीसवीं सदी में'' ने पिछली दो सदियों में धनसंपदा और आय की विषमता की गत्यात्मकता का विवरण बहुत परीश्रम से निरूपित किया है और आर्थिक विषमता के भावी स्वरूप का कदाचित चिन्ताजनक चित्रण भी किया है। इसी क्रम में पिकेटी ने प्रबंधक वेतनमानों में हो रही विस्फोटक वृद्धि के विषय में अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए यह भी सुझाया है कि हम इस घातक प्रवृत्ति पर किस प्रकार सफलतापूर्वक अंकुश लगा सकते हैं।

—मैट ब्रूईंग, द वीक

इस समय की उत्कृष्ट रचना, थॉमस पिकेटी की ''पूंजी—इक्कीसवीं सदी में'' यह तर्क दे रही है कि द्वितीय महायुद्ध के बाद के महान समताकारी दशक, जिनमें संयुक्त राज्य में मध्यम वर्ग का उदय हुआ, वस्तुतः एक ऐतिहासिक विसंगति मात्र थे।

—शैला दीवान, न्यूयॉर्क टाईम्स मैगज़ीन

BUSINESS & ECONOMICS
Development / Economic Development

ISBN978-81-7806-390-4

U 3904

यूनीकॉर्न बुक्स
www.unicornbooks.in • info@unicornbooks.in

पूंजी 21वीं सदी में थॉमस पिकेटी

पूंजी

21वीं सदी में

Capital in the 21st Century

थॉमस पिकेटी

अनुवादक
प्रो. बी.एस. बागला

पूंजी के संचय ओर वितरण का संचालन करने वाली विशद् गत्यात्मकताएं क्या हैं? विषमता, धन सम्पदा के संकुलन और आर्थिक संवृद्धि की संभावनाओं के प्रश्न ही 'राजार्थशास्त्र' का सार सत्व हैं। किंतु पर्याप्त आंकड़ों और सुस्पष्ट दिग्दर्शी सिद्धांतों के अभाव में इन प्रश्नों के संतोषप्रद उत्तरों का अन्वेषण दुःसाध्य बना रहा है। थॉमस पिकेटी ने ''पूंजी—इक्कीसवीं सदी में'' 20 देशों के 18वीं सदी तक के आंकड़ों का प्रयोग कर महत्वपूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक स्वरूप-रचनाओं को उजागर किया हैं। उनकी अन्वेषणाएं धन सम्पदा एवं विषमता के विषय में चिंतन में बड़ा परिवर्तन लाएंगी और भावी पीढ़ी के लिए (इस दिशा में) एक नयी कार्य सूची की रचना भी करेंगी।

पिकेटी ने दर्शाया है कि आधुनिक आर्थिक संवृद्धि एवं ज्ञान के प्रसार ने हमें कार्ल मार्क्स ने जिन विषमताकारी विभीषिकाओं की भविष्यवाणी की थी उन से तो बचा लिया है। किंतु हम अभी भी पूंजी और विषमता की अंतरंग सरंचनाओं में उतने गहन परिवर्तन नहीं ला पाए है जितने कि हमें द्वितीय महायुद्ध के बाद के आशापूर्ण दशकों में प्रतीत हो रहे थे। विषमता का सबसे बड़ा संचालक कारक तो पूंजी की प्रतिप्राप्ति दर की आर्थिक संवृद्धि दर से अधिक होने की प्रवृत्ति है और वह आज भी भीषण विषमताओं का सृजन कर असंतोष को जन्म देकर लोकतांत्रिक जीवन मूल्यों का विघटन करने को तैयार खड़ी है। किंतु हम आर्थिक प्रवृत्तियों को किसी ईश्वर का विधान नहीं कह सकते। पिकेटी का आग्रह है कि अतीत में भी राजनीतिक स्तर के निर्णयों ने भीषण विषमताओं का निवारण किया था और भविष्य में भी वे यही कार्य पुनः कर पाएंगे।

अद्वितीय रूप से महत्वाकांक्षी, मौलिक एवं सटीकतापूर्ण ''पूंजी इक्कीसवीं सदी में, हमारे आर्थिक इतिहास बोध को नयी दिशा दिखाती है और हमें आज के लिए विनम्रतापूर्ण सीख सिखाती है।''